व्याख्यान - 14-

बी॰ए॰-I

NRB

रश्मिरथी
टिप्पणियाँ
द्वितीय सर्ग

विरल = जो सघन न हो, छितरा।
अधित्यका = पहाड़ पर की समतल भूमि।
प्रस्रवण = झरना। उटज = तृण-कुटी।
तन्द्रिल = ऊँघते हुए। लेहन = चाटना।
शाकल्य = हवन सामग्री (के छोटे टुकड़े)।
छदन = पत्ते।
आतप = धूप, रोमन्थन = पागुर
विवर = छिद्र, माँद, विश्रब्ध = निर्भीक, आश्वस्त। चीवर = मुनि-वस्त्र।
इंगुद = हिंगोट, जिसका तेल जलता था और जिससे स्त्रियाँ श्रृंगार के लिए हाथ-पाँव भी रँगती थीं।
अजिन = मृगछाला। दर्भ = कुशासन।
पालाश = पलाश का यज्ञोपयोगी खण्ड।
स्रुवा = यज्ञीय पात्र, जिससे घृत की आहुति दी जाती है।
मन से तन का ... सिद्ध मंत्र पाया है = मन की सिद्धि: इन्द्रियों पर विजय पाना।
तन की सिद्धि हुई शारीरिक विजय।
अस्त्र-शस्त्र इस विजय के साधन हैं।
क्लीव = नपुंसक।
षड्विकार = शारीरिक परिवर्तन प्रत्येक जीव में छह प्रकार के स्पष्ट रूपों में दिखते हैं। 1. जन्म, 2 नवजात का बढ़कर बाल्यावस्था में पहुँचना, 3. लड़कपन, 4. जवानी, 5. बुढ़ापा, 6 मृत्यु।

Date : / /

यदि जीव को जन्म लेना पड़ा तो शेष विकार अवश्यम्भावी है। अतः पुनर्जन्म रूपी भयावह विकार से बचने के लिए इस जन्म का कठोरता पूर्वक सदुपयोग तपस्या है, जिसे षड्विकारों से लड़ना कहा जाता है। 1. काम, 2. क्रोध, 3. मद, 4. लोभ, 5. मात्सर्य और 6. अहंकार भी छह मूल विकार माने गये हैं।

मुख में वेद ... ऋषि के सम्बल = परशुरामजी में क्षात्र-शौर्य भी था और ब्राह्म तेज भी। उनके विषय में एक श्लोक प्रसिद्ध है:

मुखे तु सकलं शास्त्रं पृष्ठे च सशरं धनुः इदं ब्राह्मम् इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि। उनके मुख में सब शास्त्र (ब्राह्मणत्व) और पीठ पर बाण-युक्त धनुष (क्षत्रियत्व) हैं। वे शाप और शर दोनों से काम ले सकते हैं।

मुग्ध = मोहित।

कर लेना ... के आने पर = चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) में, संन्यास तपस्या की उम्र है।

शिलोञ्छवृत्ति - (शिल = खेत में गिरी बालियाँ चुनना, उञ्छ = आश्रमों आदि के रसोईघर में पका, बिना खाया, बचा हुआ अन्न सुखाकर खाने के लिए रखना। वृत्ति = आजीविका।)

कुछ तपस्वी ब्राह्मण न तो खेती करते थे, न भिक्षाटन, किसान के खेत काट लेने के बाद वे बिखरी बालियाँ-दाने चुन लेते थे। उसका आधा वे कृषक को दे आते थे और शेष से अपनी जीविका चलाते थे। फसल के दिन बीतने पर भण्डारों का सुखाया हुआ बचा अन्न उनका भोजन था। जीवन-यापन की इन्हीं विधियों का नाम शिलोञ्छवृत्ति है।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date : / /

वेश्म = घर। परशोषक = दूसरों के शोषक।
कल्पित अभाव = जो अभाव वस्तुतः है नहीं।
शंख - गंगाजल = पूजा के सामान।
जो भी खिलता ... जाता है = सभी उत्पादन क्षत्रियों (राज-वर्ग) के अधिकार में अनुचित ढंग से चले जाते हैं।
भुजा = क्षत्रिय, जो ब्रह्माजी के बाहु से उत्पन्न माने जाते हैं।

विप्र जाति के ... उठाने दो = कोमलता-युक्त कठोरता, धीरता-वीरता के साथ तपस्या, और मानवता के महागुणों की पहचान की ये शर्तें विप्रों के अतिरिक्त दूसरे लोग नहीं पूरी कर सकते। अतः दूसरों के शस्त्र-धारण का परशुराम जी निषेध करते थे।
वज्रदंष्ट्र = वज्रकीट, लकड़ी और पत्थर तक छेद डालनेवाला कीड़ा। ऊरु = जाँघ।
अभिजन = कुल समूह, वंश।
अन्तेवासी = गुरु के पास रहकर शिक्षा पानेवाला।

कार्तवीर्य = कृतवीर्य का बेटा, सहस्रार्जुन नामक कमीन हारा हुआ राजा। परशुराम जी के पिता, जमदग्नि ऋषि के आश्रम में उसने बहुत ऊधम मचाया, परशुराम जी ने दण्डस्वरूप उसे मार डाला।
किल्विष = पाप।
निःसंग = अकेला।

निकिता कुमारी
29-04-2020